

सच्चे बादशाह : गुरु नानक देव जी

- विवेक शर्मा

शिक्षा अपने अज्ञान की विकसनशील अमूर्त खोज है और भारतीय दर्शन में इसे बखूबी व्यंजनात्मक आश्रय प्राप्त हुआ है।

यह एक प्रमुख कारण भी रहा है कि भारतीय दार्शनिक परंपरा में प्रत्येक धर्म एवं सम्प्रदाय ने धार्मिक दर्शन को आधार बनाकर मूलतः विभिन्न शिक्षाओं का ही प्रचार-प्रसार करने का कार्य किया- "दर्शनाम् मूलः शिक्षादर्शनम्।"

ग्रीक दार्शनिक प्लेटो अपनी पुस्तक 'रिपब्लिक' में यह तक लिखते हैं-

"जो व्यक्ति ज्ञान को प्राप्त करने तथा नई-नई बातों को जानने के लिए रुचि प्रकट करता है तथा जो कभी संतुष्ट नहीं होता, उसे दार्शनिक कहा जाता है।"

अतः भारतीय दर्शन परंपरा में जिन लीजेंड्स (दिव्य-पुरुषों) का नाम स्वर्णाद्वारों से लिखा गया। उनमें भी गुरु नानक देव सिरमौर संत हैं।

सिक्ख परंपरा के वाहक श्री गुरु नानक देव (जन्म सम्वत् 1526 विक्रमी/1469 ई.) निर्गुण संत परंपरा के अग्रज के बतौर 'एक ओंकार' का महात्म्य बताते हैं-

एक ओंकार सतनाम, कर्तापुरख, निरभउ, निर्वैर

अकाल मूरति, अजूनी सैभं, गुरु प्रसादि ॥

आदि सच, जुगादि सच. है भी सच, नानक होसी भी सच ॥ -इसी प्रकार, आदर्श पुरुष की व्याख्या प्रस्तुत करते हुए कहते

"ऐसे जन विरले जग अंदरि, परखि खजाने पाइआ।

जाति वरन ते भए अतीता, ममता लोभ चुकाइआ।

नामि रते तीरथ से निरमल, दुखु हउमै मैलु चुकाइआ।

नानकु तिन के रन पखालै, जिन गुरुमुखि साचा भाइया॥"

गुरु नानक देव जी ब्रह्म की शाश्वता के विषय में एक-सीधे सच्चे मार्ग के समर्थक थे-

"अकासी पाताली तूं त्रिभवणि रहिआ समाइ।

तू जल थलि महीअलि भरिपूरि लीणाँ तू आपे सरब समाणां ।।"

गुरु का महात्म्य बतलाते हुए, उसके 'ज्ञान' से 'द्वन्द्व-नाश' की प्राप्ति का वर्णन करते हुए कहते हैं-

"सतगुरु मिलै त दुविधा भागै,

कमल विगासी मनु हरि प्रभ लागै।

जीवतु मरै महा रसु आगे।

गुरि मिलिए मिली अंक समाइया/

करि किरपा धरु महलु दिखाइआ।।"

- (नानक बाणी, गठड़ी सबद-9)

मृत्यु का अटल सत्य बताकर श्री गुरु नानक देव जी 'मोह-त्याग'

तथा 'जीवन की नश्वरता' का बोध कराते नजर आते हैं-

"खेलु खेह रलाईए ता जीउ केहा होई.

जलिआ सभी सिआणपा उठि चलिआ रोई।।"

लोकमंगल साधना के संदर्भ में आदि गुरु श्री नानक देव जी परमात्मा के नैकट्य का मार्ग प्रशस्त करते दिखते हैं-

"सचु करणि अभ अंतरि सेवा।

मनु तृपतासि तृपतासि अभेदा।।"

- (नानक बाणी, पृ. 111)

ज्ञान-भक्ति तथा कर्म की त्रिवेणी श्री गुरु नानक देव जी द्वारा 'मैं' रूपी "ठग" के त्याग के साथ "मानव-सेवा" का वैश्विक सूत्र प्रदेय स्वरूप प्रस्तावित किया गया-

"अपने ही सुख सों सब लागे,

क्या दारा क्या मीत।

मेरो मेरो सभी कहत हैं.

हित सों बाध्यों चीत।

अंतकाल संगी नहिं कोऊ,

भह अचरज की रीत।।"

अतः वह इस दिशा में "नाय सुमिरन" की श्रेष्ठता सिद्ध करते हुए कहते हैं-

"जिनी नामु धिआइआ, गए मसकति थालि।

नानक ते मुख उजले, केती छुटी नालि।।"

- (जपुजी)

मध्यकालीन भक्ति युग में जब मानव आक्रमणों से बेहद त्रस्त तथा अपने जीवन मूल्यों के प्रति शंका-भाव से भर चुका था। ऐसे में मानवतावाद के पोषक श्री गुरु नानक देव जी मनुष्य के सात्विक जीवन हेतु प्रेमभक्ति का उपदेश देते हैं-

"भाऊ भगति करि नीचु सदाए।

तऊ नानक मोखतः पाए।।"

- (आसा, म. 1) अस्तुः सद्गुरु श्री गुरु नानक देव जी संपूर्ण भारतीय संत परंपरा में इस दृष्टि से भी अपनी विशिष्ट पहचान रखते हैं चूंकि वह अत्यंत विषम मध्ययुगीन दौर में "दार्शनिकता" तथा "शिक्षा-प्रेषण" के धरातल पर "व्यावहारिक ज्ञान" का अमृत छिड़ककर अखिल विश्व जगत को एकता के सूत्र में पिरोने का श्रेष्ठतम् 'पुरुषार्थ' करते नजर आते हैं-

"पवणु गुरु, पाणी पिता, माता धरि महतु।

दिवसु राति दुइ दाई दाइआ, खेलै सगल जगतु।।"

वर्तमान-जगत में शिक्षा एवं दर्शन की ऐसी प्रासंगिकता अन्यत्र दुर्लभ है।...।।

गुरु नानक देव जी द्वारा समाज में व्याप्त स्वार्थ एवं लिप्सा की भावना का कड़ा विरोध अपनी शिक्षाओं के माध्यम से किया गया-

"लबु पापु दुइ राजा महंता कूडु होआ सिकदारु। कामु नेबु सदि पूछीए बहि बहि करे बीचारु।।"

अर्थात् लोभ और पाप आज राजा बन बैठे हैं और झूठ उनका चौधरी है। काम इनके दरबार का नायब है जिसके साथ बैठ-बैठ कर ये सलाह-मशविरा करते हैं।

गुरु नानक देव जी द्वारा एक ऐसे समय में राजाओं की निरंकुश नीतियों का विरोध किया गया जब राजाओं को दैवीय अधिकार प्राप्त थे। ऐसे में नानक देव जी अपनी बात बेहद बेबाकी के साथ सम्मुख रखते नजर आते हैं-

दरसनि देखिए दइआ न होइ। लए दिते विणु रहै न कोइ ॥ राजा निआउ करे हथि होइ। कहै खुदाइ न भानै कोइ।।

- (पन्ना 350)

गुरु नानक जी ने 'सच्ची शिक्षा' के संदर्भ में कहा है- "पण्डित बांचे पोथियाँ, ना बूझहिं न विचारु।

अन्य कइ मति दे चलहिं, माया का व्यापारु।।"

"काजी हो कै करे न्यायी।

फेरे तसबी करे खुदाई.

वड्डी लै के हक्क गंवाइ।

जे को पुच्छे, पढ़ सुणाई."

इसके पीछे कथा यह है कि मौलवी मुहम्मद हसन की अपनी

कोई संतान नहीं थी, अतः बालक नानक को ही पुत्र-सम प्रेम करते थे। वह बालक नानक को फारसी पढ़ाते थे। एक दिन वे बच्चों को फारसी के अक्षर पढ़ा रहे थे-अलिफ, बे, पे। अन्य बालक चुपचाप तख्ती पर लिख रहे थे किंतु नानक ने पूछ लिया-मौलवी जी, अलिफ का क्या अर्थ है?

मौलवी बोले-'अलिफ का अर्थ कुछ भी नहीं, वह तो केवल

एक अक्षर मात्र है।'

नानक बोले-" आपको नहीं आता तो लीजिये मैं बताऊँ अलिफ अल्लाह को याद कर, गफलतु मनहिं बिसारा।" यह सुन सब अवाक् रह गए।

गुरु नानक देव जी यह शिक्षा देते हैं कि सच्चा मनुष्य वह है जो सच्ची शिक्षा ग्रहण करता है, जो दूसरों के दुःख देखकर उन पर

दया करता है और कुछ दान-पुण्य करता है-

"सच तांपर जानिये जा सिख सच्ची लेइ।

दया जाने जीव की, किछ पुन्न दान करेइ।।"

एक जगह वह यह भी कहते हैं।-

"संपऊ संचयी भये विकार"

अर्थात् धन इकट्ठा करने से मन में विकार घर कर जाता है। गुरु नानक देव गुरु को ही "सच्चा साथी" मानते हैं। वह कहते हैं कि 'मैं अपने गुरु पर बलिहारी जाता हूँ जिसने मुझे सच्चा रास्ता बताया। उसने मुझ जैसे मामूली मनुष्य को भी देवता बनाने में देर नहीं की। यथा-

गई-

"बलिहारी गुरु आपने दिऊहाडी सदवार।

जिन्हि मानस ते देवते किये, करत न लागी बार।।"

गुरु गोबिन्द सिंह जी द्वारा इस बात की इस रूप में बानगी दी

"सम सिखन को सुख दियो जिह तिह भये सहाय"

गुरु नानक देव जी का 'दर्शन' अनूठा है। मात्र शिक्षा ही नहीं अपितु दर्शन के क्षेत्र में भी अनेक ऐसे प्रसंग हैं, जिनका उल्लेख यहाँ आवश्यक हो जाता है।

एक बार प्रश्न उठता है-अहम् का वह संसार क्या है जिसका निर्माण मानव-पतन तथा ईश्वर से विलगता के कारण आत्मा करती है? तब बाबा नानक देव जी कहते हैं-

"तितु सखरडै भईले निवासा

पाणी पावकु तिनहि कीआ।

पंकजु मोह पगु नहीं चालै

हम देखा तह डूबी अले।

न एकु न चेतसि मूड मना।

हरि विसरत तेरे गुण गलिआ।"

(1) रहाड: 229, राग आसा म. 1. आ.ग्रं. पृ. 357)

अर्थात्, अहम-जगत् पीड़ा का जगत् है। यह अग्नि-लोक

है-अग्नि, जो कि कामनाओं तथा असन्तुष्ट कामनाओं के परिणामस्वरूप हिंसा, स्वार्थ, लोलुपता तथा क्रोध की चार अनैतिकताओं की प्रतीक है। अहम् की दुनिया आसक्ति, स्वार्थ, लोभ तथा मोह की दुनिया है।

दर्शन के क्षेत्र में गुरु नानक देव जी 'मनन' तथा 'आत्म मूल्यांकन' पर बल देते हुए कहते हैं कि मनन तथा नाम की साधना मनुष्यता की दिव्यता प्रदान करती है-

"सचु ता परु जाणीऐ जा रिदै सचा होइ।

कूड़ की मलु उतरै तनु करे हछा धोइ।

सचु ता परु जाणीऐ जा सचि घरे पिआरु।

नाउ सुणि मनु रहसीऐ ता पाए मोख दुआरु।

सचु ता परु जाणीऐ जा जुगति जाणै जीउ।

धरती काइआ साधि कै विचि देइ करता बीउ।

सचु ता परु जाणीऐ जा सिख सची लेइ।

सच ता परु जाणीऐ जा आतम तीरबि करे निवासु।

दइआ जाणै जीअ की किछु पुंनुदानु करेइ।

सति गुरु नो पुछि कै वहि रहै करे निवासु। सचु सभना होइ दारु पाप कठै धोइ।

नानकु वरवाणै बेनती जिन सचु पलै होइ।"

(श्लोक म. 1. वार आसा, आदि, ग्रंथ, पृ. 468) कबीर जिसे "अनहद नाद", "गगन दमामा बाजै" इत्यादि संबोधन देते हैं। गुरु नानक देव जी को वह दिव्य संगीत 'रुणझुण

का आत्मसंगीत' अनुभव होता है। वह कहते हैं कि
"अनहदो अनहदु बाजै, रुणझुण कारे राम॥
मेरा मनो, मेरा मनु राता, लाल पियारे राम॥

अनदिनु राता मनु वैरागी, सुन मण्डली धरु पाइआ॥

आदि पुरखु अपरंपरु पियारा, सतिगुरु अलखु लखाइआ॥

आसणि वैसणि धिरु बीचारे, नानक नाभि रते वैरागी॥

अनहद रुणझुण कारे।"

अर्थात्, अनाहत शब्द अनाहत चाल से रुणझुण बज रहा है।

हे प्यारे राम! मेरा मन तेरे ही रंग में पूरी तरह से रंग गया। दुनिया की ओर से मैंने आंखें मूंद ली हैं और मेरा ध्यान दिन-रात राम की ओर लगा है। अब शून्य मण्डल में मेरा मन डूबा हुआ है। सतगुरु ने उस आदि पुरुष परमेश्वर की झलक दिखा दी है। अब मेरा मन डांवाडोल होने की स्थिति से ऊपर उठ चुका है और वह चिन्तन करने लगा है, जो वैरागी पुरुष नाम में डूब जाता है उसे रुणझुण का आत्मसंगीत सुनाई देता है। कबीर जिस प्रेम का महत्त्व बताते हुए कहते हैं कि-

"पोथी पढ़ि पढ़ि जग मुआ, पंडित भया न कोय। ढाई आखर प्रेम का, पढ़े सो पंडित होय।।"

- संत कबीरदास

जायसी जिसकी व्याख्या एक बड़े फलक पर करते हैं-

"मानुष प्रेम भएउ बैकुण्ठ, नाहिं ते काह छार एक मुट्ठी।" गुरु नानक देव जी उसे व्याख्यायित करते समय 'गागर में

सागर' भरने का कार्य कर दिखाते हैं-

"जिन्हीं न पायो प्रेम-रस, कंत न पायो साऊ।

संझे घर का पाहुना, जिऊ आया तिऊ जाऊ।।"

अर्थात्, जिन्होंने अपने हृदय में प्रेम का विकास नहीं किया और जिन्होंने प्रियतम प्रभु का साथ नहीं निभाया। वे दो घरों के एक अतिथि के समान हैं जो भूखा आता है और भूखा-प्यासा ही चला जाता है..।।

वास्तव में यह गुरु नानक देव जी के दर्शन एवं शिक्षाओं की सच्ची उत्तरजीविता भी है..।।